International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 24-11-2025, Accepted: 23-12-2025, Published: 07-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 1-3

सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

अनुबाला[1], विक्रम सिंह औलख[2]
[1] शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ राजस्थान, भारत
[2] प्राध्यापक, शोध निर्देशक, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ राजस्थान, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। नैतिक मूल्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक व्यवहार एवं जीवन–दृष्टि को दिशा प्रदान करते हैं। वर्तमान सामाजिक परिवेश में मूल्यों में आ रहे परिवर्तन के संदर्भ में इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। शोध में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत, शैक्षिक एवं मानवीय मूल्यों का विश्लेषण किया गया। चयनित न्यादर्श पर मानकीकृत उपकरणों के माध्यम से आँकड़ों का संग्रह कर सांख्यिकीय विधियों द्वारा उनका विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्य–संबंधी प्रवृत्तियाँ लगभग समान स्तर की पाई गईं। यह परिणाम दर्शाता है कि विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का विकास विद्यालय के प्रकार से अधिक पारिवारिक वातावरण, सामाजिक अनुभव एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होता है। यह शोध मूल्य–आधारित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है।

मूल शब्द: नैतिक मूल्य, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी, सरकारी विद्यालय, गैर–सरकारी विद्यालय, मानवीय मूल्य, मूल्य शिक्षा

प्रस्तावना
मानव जीवन का उद्देश्य केवल बौद्धिक दक्षता या भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका वास्तविक लक्ष्य एक संतुलित, जिम्मेदार एवं नैतिक व्यक्तित्व का विकास है। इस दृष्टि से नैतिक मूल्य किसी भी समाज की आधारशिला माने जाते हैं, क्योंकि वे व्यक्ति के विचारों, व्यवहारों एवं निर्णयों को दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया का मूल उद्देश्य भी केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में सत्य, ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं अनुशासन जैसे नैतिक मूल्यों का विकास करना है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तीव्र तकनीकी प्रगति, उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा एवं भौतिकतावादी जीवन–शैली ने समाज में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए हैं, किंतु इसके साथ–साथ नैतिक मूल्यों के क्षरण की समस्या भी उभरकर सामने आई है। आज यह व्यापक रूप से अनुभव किया जा रहा है कि अनेक विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं, परंतु उनके आचरण, सामाजिक संवेदनशीलता एवं नैतिक प्रतिबद्धता में अपेक्षित संतुलन दिखाई नहीं देता। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन शैक्षिक अनुसंधान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

विद्यालय विद्यार्थियों के नैतिक विकास का प्रमुख केंद्र होता है, क्योंकि यहीं उन्हें सामाजिक नियमों, सामूहिक जीवन, सहयोग, सह–अस्तित्व एवं उत्तरदायित्व का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होता है। शिक्षक, विद्यालयी वातावरण, पाठ्यक्रम, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा मूल्य–आधारित शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके साथ ही पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिवेश तथा सांस्कृतिक परंपराएँ भी नैतिक विकास को गहराई से प्रभावित करती हैं।

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर का कालखंड विद्यार्थियों के नैतिक विकास की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माना जाता है। यह वह अवस्था है जब विद्यार्थी आत्मचिंतन, स्वतंत्र निर्णय एवं सामाजिक पहचान की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इस चरण में यदि नैतिक मूल्यों का उचित मार्गदर्शन न मिले, तो विद्यार्थी भौतिक सफलता को ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य मानने लगते हैं। इसके विपरीत, यदि इस अवस्था में नैतिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से समाहित किया जाए, तो विद्यार्थियों का व्यक्तित्व अधिक संतुलित, जिम्मेदार एवं समाजोपयोगी बन सकता है।

विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि विद्यालय का प्रकार, शिक्षण–संस्कृति, लिंग, सामाजिक परिवेश तथा शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शैक्षिक संरचना, अनुशासन व्यवस्था, मूल्य–आधारित गतिविधियों तथा अपेक्षाओं में अंतर विद्यार्थियों के नैतिक दृष्टिकोण को भिन्न रूप में आकार दे सकता है। इसी प्रकार, सामाजिक अपेक्षाएँ एवं पारिवारिक भूमिकाएँ बालक एवं बालिकाओं के नैतिक विकास को अलग–अलग दिशा प्रदान कर सकती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी शिक्षा को मूल्य–आधारित एवं चरित्र–निर्माण उन्मुख बनाने पर विशेष बल दिया है। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि भविष्य के नागरिकों का निर्माण तभी संभव है जब शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रभावना को केंद्रीय स्थान दिया जाए। इस संदर्भ में विद्यालयों में नैतिक मूल्यों की स्थिति का वैज्ञानिक अध्ययन न केवल शैक्षिक गुणवत्ता, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण की दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

शोध की आवश्यकता
वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नैतिक मूल्यों में हो रही गिरावट एक गंभीर शैक्षिक चुनौती के रूप में उभर रही है। अनेक विद्यार्थी उचित नैतिक मार्गदर्शन के अभाव में असमंजस, असंवेदनशीलता एवं मूल्यहीनता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त, विद्यालय के प्रकार, लिंग एवं सामाजिक परिवेश के आधार पर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में विद्यमान संभावित अंतर को समझने हेतु तुलनात्मक एवं व्यवस्थित अध्ययनों की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट कर शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों एवं नीति–निर्माताओं को मूल्य–आधारित शिक्षण कार्यक्रमों, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों एवं नैतिक शिक्षा की प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने हेतु ठोस आधार प्रदान करेगा। अतः विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का

अध्ययन समयोचित, प्रासंगिक एवं समाजोपयोगी शैक्षिक अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

संबंधित शोध साहित्य

बसु महात्रे (2020) के अध्ययन में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों को उनके समग्र व्यक्तित्व विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण घटक माना गया। अध्ययन में यह पाया गया कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर विद्यमान है, जिस पर विद्यालयीय वातावरण, मूल्य–आधारित गतिविधियों एवं शिक्षण–संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। साथ ही, लिंग के आधार पर भी नैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया। शर्मा मृदुला (2020) के अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में महिला शिक्षिकाओं की भूमिका को नैतिक एवं नागरिक मूल्यों के विकास में केंद्रीय माना गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि महिला शिक्षिकाएँ प्राथमिक स्तर पर बच्चों में संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता एवं राष्ट्रभावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। पटेल स्वाति (2023) ने नैतिक मूल्यों में हो रही गिरावट को एक गंभीर शैक्षिक चुनौती के रूप में रेखांकित किया। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालय के प्रकार का नैतिक मूल्यों पर निर्णायक प्रभाव नहीं है, जबकि लिंग के आधार पर अंतर स्पष्ट रूप से विद्यमान है। नैतिक विकास पर पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक अनुभवों का प्रभाव अधिक पाया गया। सोनी, सुरभि एवं विजय लक्ष्मी (2016) के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि विभिन्न संकायों, क्षेत्रीय पृष्ठभूमि एवं सामाजिक परिवेश के अनुसार विद्यार्थियों के जीवन–मूल्यों में भिन्नता पाई जाती है। कला संकाय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रवृत्ति अधिक, जबकि विज्ञान संकाय में बौद्धिक मूल्यों की प्रधानता पाई गई। ग्रामीण विद्यार्थियों में पारंपरिक मूल्यों की स्वीकार्यता अपेक्षाकृत अधिक देखी गई।

उपर्युक्त अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के नैतिक एवं जीवन–मूल्य विद्यालयीय वातावरण, लिंग, सामाजिक परिवेश एवं शिक्षण–संस्कृति से प्रभावित होते हैं। प्रस्तुत शोध इन्हीं निष्कर्षों के आलोक में नैतिक मूल्यों के शैक्षिक महत्व को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

शोध के उद्देश्य

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्यो के आयाम व्यक्तिगत मूल्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्यो के आयाम शैक्षिक मूल्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्यो के आयाम मानवीय मूल्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाऐ

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों मे नैतिक मूल्य के आयाम व्यक्तिगत मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों मे नैतिक मूल्य के आयाम शैक्षिक मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों मे नैतिक मूल्य के आयाम मानव मूल्य के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बीकानेर ब्लॉक के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर नियमित रूप से अध्यनरत विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या माना गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरल यादृच्छिक विधि द्वारा 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित नैतिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया। इसकी विषय वस्तु वैधता की जांच विषय विशेषज्ञों द्वारा की गई, वैधता अत्यंत मजबूत पाई गई। मापनी का विश्वसनीयता गुणांक (r-value) = 0.86 प्राप्त हुआ जो कि अत्यधिक उच्च विश्वसनीयता का माना जाता है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्यो के आयाम व्यक्तिगत मूल्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

सारणी 1: व्यक्तिगत मूल्य के आधार पर तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश	टी मूल्य	सार्थकता
सरकारी	400	134.80	7.78	798	1.66	असार्थक
गैर–सरकारी	400	135.71	7.75			

उपरोक्त सारणी 1 के अनुसार सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 134.80 (मानक विचलन 7.78) तथा गैर–सरकारी विद्यार्थियों का मध्यमान 135.71 (मानक विचलन 7.75) प्राप्त हुआ। इनके अंतर की जांच टी परीक्षण द्वारा करने पर इसका मान 1.66 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 798 पर असार्थक है। अतः परिकल्पना H01 को स्वीकृत किया गया यह दर्शाता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य लगभग एक समान विकसित हैं। अतः व्यक्तिगत मूल्यों में सरकारी और गैर–सरकारी विद्यार्थियों के मध्य कोई वास्तविक अंतर नहीं पाया गया। इस आयाम में सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों जैसे आत्मानुशासन, आत्म–नियंत्रण, ईमानदारी, समयपालन, व्यक्तिगत जिम्मेदारी और आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अंतर न होने का तात्पर्य यह हुआ कि व्यक्ति–केन्द्रित नैतिक मूल्यों का विकास विद्यालय–प्रकार पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक वातावरण तथा व्यक्तिगत अनुभवों से अधिक प्रभावित होता है।

2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्यो के आयाम शैक्षिक मूल्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

सारणी 2: शैक्षिक मूल्य के आधार पर तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश	टी मूल्य	सार्थकता
सरकारी	400	135.22	7.52	798	0.85	असार्थक
गैर–सरकारी	400	135.68	7.79			

सारणी 2 से ज्ञात होता है कि शैक्षिक मूल्य आयाम में सरकारी विद्यार्थियों का मध्यमान 135.22 (मानक विचलन 7.52) तथा गैर–सरकारी विद्यार्थियों का मध्यमान 135.68 (मानक विचलन 7. 79) प्राप्त हुआ। टी –मान 0.85 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता का अंश 798 पर असार्थक है। अतः परिकल्पना H02 को स्वीकृत किया गया। इसका अर्थ यह है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक मूल्य सम्बद्ध प्रवृत्तियाँ लगभग समान हैं। सीखने की रुचि, शिक्षा का महत्व, अध्ययन के प्रति गंभीरता तथा ज्ञानार्जन की इच्छा जैसी विशेषताएँ विद्यालय के प्रकार पर आधारित न होकर विद्यार्थी के व्यक्तिगत प्रेरक कारकों और पारिवारिक सहयोग पर आधारित होती हैं। इस प्रकार, शैक्षिक मूल्यों के आयाम में दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया।

3. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का नैतिक मूल्यो के आयाम मानवीय मूल्य के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी 3: मानवीय मूल्य के आधार पर तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश	टी मूल्य	सार्थकता
सरकारी	400	134.92	7.62	798	1.03	असार्थक
गैर–सरकारी	400	134.34	8.23			

सारणी 3 से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यार्थियों का मध्यमान 134. 92 (मानक विचलन 7.62) तथा गैर–सरकारी विद्यार्थियों का मध्यमान 134.34 (मानक विचलन 8.23) पाया गया। इनके अंतर की जांच टी परीक्षण द्वारा करने पर टी–मान 1.03 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता का अंश 798 पर असार्थक है। अतः परिकल्पना H03 को स्वीकृत किया गया। यह दर्शाता है कि सरकारी और गैर–सरकारी दोनों ही प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का स्तर लगभग समान है। मानवीय मूल्य अधिकांशतः सामाजिक परिवेश, परिवार एवं सामुदायिक व्यवहार से विकसित होते हैं, न कि केवल विद्यालय से। अतः विद्यालय–प्रकार के अंतर के बावजूद विद्यार्थियों के मानवीय गुणों में किसी प्रकार का महत्त्वपूर्ण अंतर परिलक्षित नहीं हुआ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन में यह देखा गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तिगत सोच, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण तथा सामाजिक व्यवहार के स्तर लगभग समान हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों के विकास में केवल विद्यालय का प्रकार निर्णायक भूमिका नहीं निभाता। विद्यार्थियों के विचार, आचरण एवं मूल्य उनके पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिस्थितियों तथा दैनिक अनुभवों से अधिक प्रभावित होते हैं। विद्यालय विद्यार्थियों को दिशा प्रदान करता है, किंतु मूल्यों का वास्तविक निर्माण घर और समाज में होता है। यह भी स्पष्ट हुआ कि यदि विद्यार्थियों को सकारात्मक वातावरण, उचित मार्गदर्शन और नैतिक सहयोग प्राप्त हो, तो वे किसी भी विद्यालय में अध्ययनरत हों, उनका विकास संतुलित रूप से हो सकता है। अतः विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए विद्यालय, परिवार और समाज के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं। यह अध्ययन शिक्षा व्यवस्था को अधिक संवेदनशील और मानव–केंद्रित बनाने की आवश्यकता पर बल देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पटेल स्वाति (2023) मोरल वैल्यूज अमोंग प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, वॉल्यूम 11, इशू 3, पृष्ठ संख्या 3730–3735
2. बसु म्हात्रे 2020 ए स्टडी ऑफ मोरल वैल्यूज अमोंग हाई स्कूल स्टूडेंट्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स वॉल्यूम 8 इश्यू 5 पृष्ठ संख्या 2889–2892
3. शर्मा मृदुला (2023) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल उद्देश्य को पूर्ण करने में महिला शिक्षिकाओं की सृजनात्मक भूमिकाःबाल विद्यार्थियों में देशानुराग एवं मूल्यों का बीजारोपण। इंटरनेशनल जर्नल आफ मल्टी डिसीप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 12, इश्यू (3) 3, पृष्ठ संख्या 25–31
4. सोनी, सुरभि एवं लक्ष्मी, डॉ. विजय (2016)। उच्च माध्यमिक स्तर के विभिन्न संकायों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति अभिविनृति का तुलनात्मक अध्ययन। शोधः शाह गोविंद शिक्षा महाविद्यालय, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।
5. सुप्रिता कुमार सिन्हा एवं वी. के. शानवाल (2023) मोरल डेवलपमेंट का सेकेंडरी क्लास स्टूडेंट्स विथ इंडियन नॉलेज सिस्टम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, वॉल्यूम 11 इशू 1, पृष्ठ संख्या 575 –590
6. सुभाष चंद्र अग्रवाल एवं कल्पनाथ वर्मा (2005)। सरस्वती विद्या मंदिर एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित शोधप्रबंध